# अध्याय - 20
# आर्थिक प्रणाली

**हम पढ़ेंगे**

20.1 आर्थिक प्रणाली का अर्थ एवं परिभाषा
20.2 पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली
20.3 समाजवादी आर्थिक प्रणाली
20.4 मिश्रित आर्थिक प्रणाली या मिश्रित अर्थव्यवस्था

प्रत्येक देश या उसकी अर्थव्यवस्था को कुछ मुख्य समस्याओं को हल करना होता है, जैसे - कौन-कौन सी वस्तुओं का उत्पादन किया जाए, वस्तुओं का उत्पादन किस प्रकार किया जाए, उत्पादन किसके लिए किया जाए आदि। इन समस्याओं को हल करने के लिए सरकार को निर्णय लेना होते हैं। सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों के आधार पर ही न केवल आर्थिक समस्याएँ हल होती हैं, वरन् उस देश के निवासी अपना जीवनयापन करते हैं और सम्पूर्ण आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता है।

यदि हम विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं का अध्ययन करें तो प्रतीत होगा कि विश्व के कुछ देशों में उत्पादन एवं वितरण का कार्य सरकार के द्वारा किया जाता हैं। इन देशों में उत्पत्ति के लिए साधनों पर सरकार का स्वामित्व होता है। ऐसे देशों में क्या उत्पादन किया जाए? किन-किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए? उत्पादन किसके लिए किया जाए? आदि विभिन्न समस्याओं का हल सरकार के द्वारा किया जाता है। ऐसी व्यवस्था को **समाजवाद** का नाम दिया जाता है।

इसके विपरीत अनेक ऐसे देश भी है जहां सरकार का हस्तक्षेप बहुत कम होता है। अर्थव्यवस्था की सभी समस्याओं का हल बाजार शक्तियों के द्वारा होता है। उत्पत्ति के साधनों पर सरकार का स्वामित्व न होकर व्यक्तियों का होता है। ये व्यक्ति बाजार की माँग के आधार पर वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। उत्पादन उन्हीं के लिए किया जाता है जिनके पास उन वस्तुओं को खरीदने की क्षमता या धन होता है। इस प्रकार की व्यवस्था को **पूंजीवाद** के नाम से जाना जाता है।

इसके साथ ही विश्व में अनेक देश ऐसे भी हैं जहाँ पर मिली-जुली पद्धति को अपनाया जाता है। ऐसे देशों में जहाँ कुछ साधनों पर सरकार का स्वामित्व होता है तो वहीं अनेक साधनों का स्वामित्व व्यक्तियों के पास होता है। अर्थव्यवस्था की मुख्य समस्याओं का निर्णय सरकार एवं निजी व्यक्तियों के द्वारा मिल जुलकर लिया जाता है। ऐसी अर्थव्यवस्थाओं में मिली-जुली या मिश्रित प्रक्रिया को अपनाया जाता है।

## 20.1 आर्थिक प्रणाली का अर्थ एवं परिभाषा

किसी देश में आर्थिक क्रियाओं का संचालन जिस व्यवस्था से होता है उसे आर्थिक प्रणाली कहा जाता है। समाज द्वारा निर्धारित इस व्यवस्था के द्वारा ही अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित सभी निर्णय लिए जाते हैं, जैसे किन-किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाना है, उत्पादन कैसे किया जाना है, उत्पादन किसके लिए किया जाना है आदि। इन्हीं निर्णयों के आधार पर ही अर्थव्यवस्था में उपभोग, उत्पादन, विनिमय एवं वितरण का निर्धारण होता है। देश के निवासियों का जन-जीवन इन्हीं निर्णयों पर निर्भर करता है। इस प्रकार आर्थिक प्रणाली को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है -

**प्रो. ए. जे. ब्राउन -** ''आर्थिक प्रणाली एक माध्यम है जिसके द्वारा लोग अपनी जीविका का उपार्जन करते हैं।''

**प्रो. एम. गोटालिक** – ''आर्थिक प्रणाली मनुष्य के जटिल सम्बन्धों के उन तरीकों का अध्ययन है जिसके द्वारा अनेक निजी व सार्वजनिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए सीमित साधनों का उपयोग किया जाता है।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि आर्थिक प्रणाली से आशय उस संस्थागत ढाँचे से है जिसके अन्तर्गत मानव का जीवन संचालित होता है। यह एक व्यापक धारणा है और समय तथा परिस्थितियों के अनुसार इसके स्वरुप में परिवर्तन होता रहता है। संक्षेप में आर्थिक प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. आर्थिक प्रणाली का मुख्य उद्देश्य आर्थिक समस्याओं को हल करना है।
2. अर्थव्यवस्था की मुख्य समस्याएँ है – क्या उत्पादन किया जाए, उत्पादन किसके लिए किया जाए और उत्पादन कैसे किए जाए।
3. अर्थव्यवस्था में मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने वाले साधन सीमित मात्रा में होते हैं।
4. आर्थिक प्रणाली के द्वारा मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए साधनों के प्रयोग के तरीकों का चुनाव किया जाता है।
5. आर्थिक प्रणाली संस्थाओं का समूह है।
6. आर्थिक प्रणाली का सम्बन्ध एक देश या देशों के समूह से होता है।
7. आर्थिक प्रणाली परिवर्तनशील होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए विश्व में मुख्यतः तीन प्रकार की आर्थिक प्रणालियाँ पाई जाती हैं, यथा – पूँजीवाद, समाजवाद और मिश्रित। इन तीनों प्रणालियों के मध्य बुनियादी अन्तर का आधार यह है कि उत्पत्ति के साधनों का स्वामित्व किसके पास है और इन साधनों का उपयोग किस प्रकार से होता है। इन तीनों प्रणालियों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैं –

## 20.2 पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली

विश्व के अनेक देशों यथा – अमरीका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, जापान, आस्ट्रेलिया आदि में पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली विद्यमान है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को अनेक नामों से जाना जाता है, जैसे बाजार अर्थव्यवस्था, निर्बाधावादी अर्थव्यवस्था, अनियोजित अर्थव्यवस्था आदि। पूँजीवाद को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है–

**प्रो. लूक्स** एवं **हूट** ''पूँजीवाद वह अर्थव्यवस्था है जिसमें निजी स्वामित्व और मनुष्यकृत या प्राकृतिक साधनों को निजी लाभ के लिए उपयोग किया जाता है।''

**प्रो. जाँन स्ट्रेची** – पूँजीवाद शब्द से आशय उस आर्थिक प्रणाली से है जिसमें कारखानों एवं खेतों पर व्यक्तियों का स्वामित्व होता है। पूँजीवाद में संसार प्रेम या स्नेह से नहीं वरन् लाभ के उद्देश्य से कार्य करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पूँजीवाद में वस्तुओं के उत्पादन एवं वितरण पर निजी व्यक्तियों का अधिकार होता है तथा वे संग्रहित पूँजी का उपयोग अपने लाभ कमाने के लिए करते हैं।

### पूँजीवादी प्रणाली की विशेषताएँ

**1. उत्पत्ति के साधनों पर निजी स्वामित्व** – पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें उत्पत्ति के सभी साधनों पर निजी व्यक्तियों का स्वामित्व होता है। इस प्रकार पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में धन कमाने और उसका अपनी इच्छा के अनुसार उपयोग करने का अधिकार होता है।

**2. आर्थिक स्वतंत्रता** – पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में कोई भी व्यवसाय चुनने और उसे इच्छानुसार चलाने की स्वतंत्रता रहती है। उपभोक्ताओं को भी अपनी रुचि एवं आदत के अनुसार वस्तुओं को चुनने की स्वतंत्रता रहती है।

**3. लाभ की भावना** – इस प्रणाली में लाभ की भावना का सर्वोच्च स्थान है। यही कारण है कि लाभ

को पूँजीवादी प्रणाली का ह्रदय कहा जाता है। पूँजीवाद में सभी गतिविधियों का संचालन लाभ के लिए किया जाता है। उद्यमियों का मुख्य लक्ष्य अपने लाभ को बढ़ाना होता है।

**4. शोषण पर आधारित** – पूँजीवादी व्यवस्था में दो वर्ग होते है, यथा – पूँजीपति वर्ग और श्रमिक वर्ग। पूँजीपति वर्ग अपने लाभ को बढ़ाने के लिए बहुत कम मजदूरी देता है। इससे श्रमिकों का शोषण होता है। इसीलिए कहा जाता है कि पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली शोषण पर आधारित रहती है।

**5. मूल्य यंत्र** (Price Mechanism) – पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का संचालन 'मूल्य यंत्र' के द्वारा होता है। मूल्य यंत्र से आशय अर्थव्यवस्था में विद्यमान माँग एवं पूर्ति की शक्तियों से है। उदाहरणार्थ – जब किसी वस्तु के मूल्य में वृद्धि होती है, तब उत्पादक उस वस्तु के उत्पादन में वृद्धि करते हैं। इससे उत्पादक के लाभ में भी वृद्धि होती है। इसके विपरीत, जब माँग की तुलना में पूर्ति अधिक हो जाती है, तब मूल्य में कमी होने लगती है। मूल्य में कमी होने की स्थिति में उत्पादक को हानि होने लगती है जिससे वह उत्पादन कम कर देता है। इस प्रकार मूल्य यंत्र या माँग एवं पूर्ति के माध्यम से सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का संचालन होता है।

**6. प्रतियोगिता** – पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली के अन्तर्गत उत्पादकों में आपस में कम मूल्य पर अधिक वस्तुएँ बेचने की प्रतियोगिता होती है। उपभोक्ता भी कम से कम मूल्य पर अच्छी वस्तुएँ खरीदने का प्रयास करते हैं। उत्पादकों में परस्पर प्रतियोगिता होने से अकुशल उत्पादक प्रतियोगिता से हट जाते हैं। इस प्रकार प्रतियोगिता से अर्थव्यवस्था की कार्यक्षमता बढ़ती है। इससे उपभोक्ताओं को सस्ती एवं अच्छी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।

**7. अनियोजित अर्थव्यवस्था** – नियोजित अर्थव्यवस्था में सभी निर्णय केन्द्रीय सत्ता या सरकार द्वारा लिए जाते हैं। किन्तु, पूँजीवाद में अर्थव्यवस्था अनियोजित होती है तथा निर्णय मूल्य यंत्र या माँग और पूर्ति की बाजार शक्तियों के द्वारा लिए जाते हैं। सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता।

**8. व्यापार चक्रों का होना** – पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली में उत्पादक एवं उपभोक्ताओं के मध्य समन्वय नहीं होता है। फलत: व्यापार चक्र क्रियाशील होते हैं। व्यापार चक्र से आशय अर्थव्यवस्था में तेजी एवं मन्दी की पुनरावृत्ति से है। अति उत्पादन से मन्दी की और कम उत्पादन से तेजी की स्थिति निर्मित होती है।

**9. उपभोक्ता की प्रभुसत्ता** – पूँजीवाद में उत्पादन से सम्बन्धित सभी निर्णय उपभोक्ता की इच्छा के आधार पर लिए जाते हैं। इसीलिए उसे राजा कहा जाता है। उत्पादक उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करता है जिनकी माँग उपभोक्ताओं द्वारा की जाती है। इसी कारण उपभोक्ता को प्रभुसत्ता सम्पन्न माना जाता है।

**पूँजीवादी प्रणाली के गुण** – पूँजीवादी प्रणाली में पाए जाने वाले प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं –

**1. स्व-संचालित प्रणाली** – इस प्रणाली में सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता। सभी आर्थिक गतिविधियों का संचालन 'मूल्य यंत्र' अथवा बाजार शक्तियों के आधार पर होता है। फलत: इस प्रणाली को स्वसंचालित प्रणाली कहा जाता है।

**2. उत्पादन एवं आय में वृद्धि** – पूँजीवादी प्रणाली के द्वारा पश्चिमी देशों में तेजी से प्रगति हुई है। इन देशों में लाभ की भावना एवं निजी सम्पत्ति के लालच में तेजी से विकास हुआ है। इस प्रणाली में प्रतियोगिता की भावना से तकनीकी स्तर में सुधार होता है। फलत: पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन तथा आय में तेजी से वृद्धि होती है।

**3. परिवर्तनशीलता** – पूँजीवाद में परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने का गुण है। परिस्थितियों के अनुसार सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों में परिवर्तन होते है। औद्योगिक नीति, कृषि नीति, व्यापार नीति, श्रम नीति आदि में देश की परिस्थितियों के अनुसार बदलाव होता रहता है, किन्तु पूँजीवादी प्रणाली अपने मूल दर्शन, यथा लाभ कमाना, के अनुसार संचालित होती रहती है।

**4. व्यक्तिगत स्वतंत्रता** – इस प्रणाली में व्यक्ति अपनी इच्छानुसार व्यवसाय का चुनाव कर सकता है। उपभोक्ता भी अपनी पसन्द के अनुसार वस्तुएँ चुन सकता है। धन कमाने और उसे खर्च करने की भी पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। संक्षेप में, पूँजीवाद के अन्तर्गत आर्थिक क्रियाओं के सम्बन्ध में पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

**5. संसाधनों का कुशलतम उपयोग** – पूँजीवाद के अन्तर्गत उत्पादक कम से कम साधनों के द्वारा अधिक से अधिक उत्पादन करने का प्रयास करता है। अपने लाभ को बढ़ाने के उद्देश्य से संसाधनों की फिजूलखर्ची को नियंत्रित रखता है। प्रतियोगिता के कारण भी उत्पत्ति के साधनों का कुशलतम उपयोग होता है।

**6. योग्यतानुसार प्रतिफल** – इस प्रणाली में व्यक्ति की योग्यता समुचित रुप से पुरस्कृत होती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी कुशलता एवं योग्यता प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। संक्षेप में, पूँजीवादी प्रणाली में प्रतिफल योग्यता के अनुसार प्राप्त होता है।

**7. प्रजातांत्रिक स्वरुप** – पूँजीवाद का एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि इसका स्वरुप प्रजातांत्रिक होता है। सभी प्रमुख निर्णय सरकार द्वारा बहुमत के आधार पर किए जाते हैं। यही कारण है कि इस प्रणाली में उपभोक्ता की इच्छा और रुचि के अनुसार ही वस्तुओं का उत्पादन होता है। इस प्रकार पूँजीवाद में उपभोक्ताओं के बहुमत का पालन किया जाता है और सभी आर्थिक क्रियाएँ इसी मूल भावना के आधार पर संचालित होती हैं।

**8. आर्थिक विकास की तीव्र गति** – विश्व के विकसित देशों का इतिहास यह बताता है कि पूँजीवादी देशों में विकास की दर अधिक रही है। लाभ की भावना पर आधारित होने के कारण इस प्रणाली में विनियोग एवं पूँजीनिर्माण की दर भी अधिक रहती है। उत्पादक वर्ग जोखिम उठाकर नई-नई तकनीकी का विकास करते है। फलतः आर्थिक विकास की दर अधिक रहती है।

## पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली के दोष

**1. आय एवं धन की असमानता** – पूँजीवादी प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि देश की सम्पत्ति कुछ मुट्ठी भर लोगों के पास जमा हो जाती है और अधिकांश लोग गरीबी एवं बेरोजगारी का जीवन व्यतीत करते हैं। इससे समाज में आय एवं धन की असमानताएँ बढ़ती हैं।

**2. वर्ग संघर्ष का जन्म** – इस प्रणाली में पूँजीपति वर्ग तथा श्रमिक वर्ग दोनों में टकराव होने लगता है। इससे अर्थ-व्यवस्था में हड़ताल, तालाबन्दी तथा तोड़फोड़ आदि देखने को मिलती है। इस प्रकार समाज में वर्ग संघर्ष का जन्म होता है।

**3. आर्थिक अस्थिरता** – पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली का संचालन मूल्य यंत्र के द्वारा होता है। अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं होती। परिणामस्वरुप अर्थव्यवस्था में तेजी एवं मन्दी की स्थिति निर्मित होती है। फलतः अर्थव्यवस्था में अस्थिरता पैदा होती है और व्यापार चक्र क्रियाशील होते हैं।

**4. बेरोजगारी** – इस प्रणाली में पूँजीपति वर्ग अपने लाभ को बढ़ाने के लिए मशीनों का उपयोग करता है। इससे श्रमिकों की माँग में कमी आती है तथा बेरोजगारी बढ़ जाती है। मन्दी की स्थिति में तो बेरोजगारी की समस्या अत्यधिक भयावह हो जाती है।

**5. शोषण आधारित व्यवस्था** – पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली में उत्पादक वर्ग अपने लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से श्रमिकों को बहुत कम मजदूरी देते हैं। श्रमिकों से काम भी अधिक लिया जाता है। स्त्रियों एवं बच्चों को काम में लगाया जाता है, किन्तु उन्हें समुचित मजदूरी नहीं दी जाती। अतः यह कहा जाता है कि यह प्रणाली शोषण पर आधारित है।

**6. मानवीय कल्याण की उपेक्षा** – पूँजीवाद में उत्पादन उन्हीं लोगों के लिए किया जाता है जिनके पास खरीदने की क्षमता होती है। परिणामस्वरूप गरीब लोगों की जरुरतों की वस्तुओं का कम तथा विलासिता

की वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है। सरकार का कार्यक्षेत्र सीमित होता है जिससे गरीब वर्ग के कल्याण की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। फलत: इस प्रणाली में मानवीय कल्याण की उपेक्षा होती है।

7. **क्षेत्रीय असमानताएँ** – पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में केवल कुछ ही क्षेत्रों का विकास होता है तथा शेष पिछड़े रह जाते हैं। कारण यह है कि पूंजीपति उन्ही स्थानों पर उद्योग लगाते हैं जहाँ उन्हें अधिक लाभ होता है। इससे आर्थिक विकास का लाभ भी कुछ ही लोगों को मिल पाता है। फलत: क्षेत्रीय विषमताएँ बढ़ती हैं तथा लोगों में असन्तोष पैदा होता है।

8. **सामाजिक परिजीविता** – पूँजीवाद में उत्तराधिकारी प्रथा के कारण पूँजीपतियों को अपार सम्पत्ति बिना किसी मेहनत के पूर्वजों से प्राप्त हो जाती है। यह वर्ग बिना किसी मेहनत के, पूर्वजों की सम्पत्ति का उपभोग करता है। इसी को सामाजिक परिजीविता कहा जाता है। संक्षेप में, पूँजीवादी व्यवस्था में समाज का एक वर्ग बिना किसी मेहनत के दूसरों द्वारा अर्जित धन पर जीवित रहता है। समाजवादियों के अनुसार यह एक बुराई है।

## 20.3 समाजवादी आर्थिक प्रणाली

समाजवाद का जन्म पूँजीवादी प्रणाली के दोषों को दूर करने के लिए हुआ है। कार्ल मार्क्स को समाजवाद का जनक माना जाता है। इस आर्थिक प्रणाली में उत्पत्ति के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व न होकर सामाजिक स्वामित्व होता है। समाजवाद को परिभाषित करते हुए प्रो. डिकिन्सन ने लिखा है,

''समाजवाद समाज की एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पत्ति के भौतिक साधनों पर सामाजिक स्वामित्व होता है तथा उनका संचालन एक सामान्य योजना के अन्तर्गत, सम्पूर्ण समाज के प्रतिनिधि एवं उसके प्रति उत्तरदायी संस्थाओं द्वारा किया जाता है। समाज के सभी सदस्य समान अधिकारों के आधार पर ऐसे नियोजन एवं समाजीकृत उत्पादन के लाभों के अधिकारी होते हैं।''

**समाजवाद के लक्षण** – समाजवादी प्रणाली के मुख्य लक्षण निम्नलिखित हैं :–

1. **उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व** – समाजवादी आर्थिक प्रणाली में उत्पत्ति के साधनों का प्रयोग सामाजिक कल्याण के लिए किया जाता है। इसमें व्यक्तिगत लाभ की भावना शून्य रहती है। चूँकि इस प्रणाली में उत्पत्ति के साधनों का स्वामित्व, सरकार या समाज के पास होता है। फलत: इस प्रणाली में आर्थिक शोषण की कोई सम्भावना नहीं रहती तथा सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है।

2. **आर्थिक नियोजन** – समाजवादी प्रणाली एक नियोजित प्रणाली होती है। इसमें केन्द्रीय नियोजन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। उत्पादन से सम्बन्धित सभी निर्णय केन्द्रीय नियोजन तंत्र द्वारा लिये जाते हैं। फलत: आर्थिक विकास भी तेजी से होता है।

3. **आर्थिक समानता** – इस प्रणाली में उत्पादन के साधनों पर राज्य का नियंत्रण होता है और साधनों का प्रयोग समाज के हित के लिए किया जाता है। इस प्रणाली में व्यक्तिगत लाभ का कोई स्थान नहीं होता। फलत: समाज में आर्थिक समानता पाई जाती है।

4. **शोषण की समाप्ति** – समाजवादी आर्थिक प्रणाली में उत्पादन एवं वितरण पर सरकार का स्वामित्व एवं नियंत्रण होता है। फलत: शोषण का प्रश्न ही नहीं उठता। श्रमिकों को उनके श्रम का समुचित प्रतिफल दिया जाता है। उत्पादन में श्रमिकों की भागीदारी होती है और उन्हें लाभ में से पर्याप्त हिस्सा प्राप्त होता है। अत: इस प्रणाली में शोषण समाप्त हो जाता है।

5. **जीवन निर्वाह के लिए श्रम की आवश्यकता** – इस प्रणाली में प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन यापन हेतु श्रम करना होता है। इससे दूसरों की आय पर जीवन यापन करने वाला वर्ग समाप्त हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करता है और बदले में उसे अपनी आवश्यकतानुसार प्रतिफल प्राप्त होता है।

6. **पूर्ण रोजगार की प्राप्ति** – समाजवाद में उपलब्ध श्रमिकों के अनुसार आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता है। इससे श्रमशक्ति के समुचित उपयोग पर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। आर्थिक तेजी एवं मन्दी भी पैदा नहीं होती। फलतः बेरोजगारी की समस्या पैदा नहीं होती।

7. **आर्थिक स्थायित्व** – इस प्रणाली में आर्थिक गतिविधियों का संचालन नियोजित ढंग से किया जाता है। इससे तेजी एवं मन्दी की समस्या पैदा नहीं होती। इस व्यवस्था में वस्तुओं का उत्पादन उनकी माँग के अनुसार किया जाता है जिससे अर्थव्यवस्था में स्थायित्व बना रहता है। फलतः व्यापार चक्र जैसी समस्या पैदा नहीं होती।

8. **कीमत-तंत्र की समाप्ति** – समाजवाद में वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है। इससे बाजार की शक्तियों का स्थान गौण हो जाता है तथा मूल्य तंत्र भी कार्यशील नहीं रहता। उत्पादकों में होने वाली परस्पर प्रतियोगिता भी समाप्त हो जाती है। विज्ञापन एवं प्रचार प्रसार पर होने वाला व्यय भी समाप्त हो जाता है।

**समाजवादी आर्थिक प्रणाली के गुण** – समाजवादी आर्थिक प्रणाली के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं –

1. **संसाधनों का अनुकूलतम प्रयोग** – समाजवादी प्रणाली में केन्द्रीय नियोजन होने के कारण उत्पत्ति के साधनों का अनुकूलतम प्रयोग सम्भव होता है। नियोजन के द्वारा संसाधनों को कम उत्पादकता वाले क्षेत्र से हटाकर अधिक उत्पादकता वाले क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है। साथ ही इसमें अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की आर्थिक क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित किया जाता है। इससे साधनों का अनुकूलतम उपयोग होता है।

2. **आर्थिक स्थायित्व** – समाजवादी प्रणाली में केन्द्रीय नियोजन के कारण उपभोग तथा उत्पादन दोनों क्षेत्रों में पारस्पारिक समन्वय पाया जाता है जिसके कारण अर्थव्यवस्था में अति उत्पादन या कम उत्पादन की स्थिति उत्पन्न नहीं होती। परिणामस्वरूप अर्थ-व्यवस्था में आर्थिक स्थायित्व बना रहता है।

3. **आर्थिक समानता** – समाजवादी प्रणाली में निजी संपत्ति, उत्तराधिकार के नियम एवं लाभ कमाने की प्रवृत्ति का कोई स्थान नहीं होता। संपत्ति एवं साधनों पर राज्य का अधिकार होता है। लोगों को उनकी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार कार्य दिया जाता है। अतः इसमें आर्थिक समानता पाई जाती है।

4. **वर्ग-संघर्ष की समाप्ति** – समाजवाद में उत्पत्ति के साधनों पर सरकारी स्वामित्व होने के कारण सम्पत्ति एवं धन के आधार पर समाज का विभाजन नहीं पाया जाता। इसमें केवल एक ही वर्ग 'श्रमिक वर्ग' होता है। जिससे समाज में वर्ग संघर्ष की कोई सम्भावना नहीं होती है।

5. **शोषण की समाप्ति** – समाजवाद में न कोई पूँजीपति होता है और न कोई मजदूर। इसमें सभी लोगों को सरकार द्वारा उनकी योग्यता के आधार पर काम दिया जाता है तथा लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ दी जाती हैं। फलतः शोषण की प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है।

6. **बेरोजगारी का अन्त** – समाजवादी प्रणाली में नियोजन द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि देश में उपलब्ध श्रम-शक्ति का पूर्ण उपयोग हो। इससे सभी व्यक्तियों को उनकी योग्यता के अनुसार काम प्राप्त हो जाता है। फलतः बेरोजगारी की समस्या पैदा नहीं होती।

7. **एकाधिकार की समाप्ति** – समाजवाद में सभी उत्पत्ति के साधनों पर सरकारी नियंत्रण होता है इससे धन एवं उत्पत्ति के साधनों का किसी व्यक्ति या वर्ग के हाथों में केन्द्रीयकरण नहीं होता है। फलतः एकाधिकारी शक्तियों का जन्म ही नहीं होता है।

8. **सामाजिक सुरक्षा** – समाजवादी व्यवस्था में बुढ़ापे की पेंशन, बेरोजगारों को भत्ता, बीमारों को चिकित्सा, बच्चों की शिक्षा, आदि की व्यवस्था सरकार द्वारा की जाती है। अतः इस प्रणाली में लोग अपने को अधिक सुरक्षित अनुभव करते हैं।

**समाजवाद के दोष** – समाजवाद के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं –

1. **उपभोक्ता की संप्रभुता का अन्त** – समाजवादी प्रणाली में उपभोक्ता अपनी पंसद से वस्तुओं का उपभोग नहीं कर सकता। इसके अन्तर्गत उपभोक्ता उन्हीं वस्तुओं और उतनी ही मात्रा का उपभोग करता है, जो राज्य उन्हें देता है। अतः समाज में उपभोक्ता की संप्रभुता समाप्त हो जाती है।

2. **सत्ता का केन्द्रीयकरण** – समाजवादी आर्थिक प्रणाली में शक्तियों का केन्द्रीयकरण हो जाता है। कारण यह है कि सभी आर्थिक क्रियाओं का संचालन सरकार के द्वारा होता है। सभी स्तरों पर सरकारी आदेशों को क्रियान्वित किया जाता है। अतः इस प्रणाली में सत्ता का पूर्णतः सरकार के हाथों में केन्द्रीकरण हो जाता है तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता का कोई स्थान नहीं रहता।

3. **उत्पादन कार्य में प्रेरणा का अभाव** – समाजवाद में उत्पादन कार्यों पर सरकार का नियंत्रण होता है तथा व्यक्तिगत लाभ का कोई भी स्थान नहीं होता। ऐसी स्थिति में श्रमिकों को अधिक कार्य करने की कोई प्रेरणा नहीं मिलती। नवीन आविष्कार, शोध एवं उत्पादन की तकनीकी आदि के प्रयोग की भी प्रेरणा नहीं मिलती।

4. **व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव** – समाजवादी अर्थव्यवस्था में सभी महत्वपूर्ण कार्य, जैसे उत्पादन की मात्रा, वितरण का आधार, वस्तु की कीमत आदि सरकार द्वारा किए जाते हैं। इस व्यवस्था में व्यक्ति की इच्छा का कोई स्थान नहीं होता। अतः समाजवाद में व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है।

5. **उत्पत्ति के साधनों का अविवेकपूर्ण उपयोग** – समाजवाद में उत्पादन एवं वितरण से सम्बन्धित सभी कार्य सरकार द्वारा किए जाते हैं। किन्तु इन कार्यों में अधिकारियों और कर्मचारियों को कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं होता। फलतः त्वरित निर्णय नहीं लिए जाते। अनेक बार निर्णय गलत भी हो जाते हैं जिससे उत्पत्ति के साधनों का उचित उपयोग नहीं हो पाता।

## 20.4 मिश्रित आर्थिक प्रणाली या मिश्रित-अर्थव्यवस्था

मिश्रित अर्थव्यवस्था एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्र साथ-साथ कार्य करते हैं। इन दोनों क्षेत्रों की भूमिका अर्थव्यवस्था में इस प्रकार निर्धारित की जाती है जिससे समाज के सभी वर्गों के आर्थिक कल्याण में वृद्धि हो सके। **भारतीय योजना आयोग के अनुसार** ''मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हैं तथा दोनों एक इकाई के दो घटकों के रूप में कार्य करते है।''

मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित उद्योगों का स्वामित्व, नियंत्रण एवं निर्देशन सरकार के हाथों में होता है। इसके विपरीत निजी क्षेत्र में स्थापित उद्योगों का स्वामित्व, नियंत्रण एवं निर्देशन निजी उद्योगपतियों के हाथ में होता है। इन दोनों क्षेत्रों के अतिरिक्त मिश्रित अर्थव्यवस्था में 'संयुक्त क्षेत्र' भी होता है। इसका संचालन सरकार एवं निजी उद्योगपतियों, दोनों के द्वारा मिलकर किया जाता है। इन क्षेत्रों का मुख्य उद्देश्य तीव्र गति से आर्थिक विकास करके लोगों के कल्याण में वृद्धि करना होता है। भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया गया है।

### मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रमुख लक्षण

मिश्रित अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. **सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों का सहअस्तित्व** – मिश्रित अर्थव्यवस्था की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्र विद्यमान रहते हैं। इन दोनों क्षेत्रों के बीच कार्यों का स्पष्ट विभाजन रहता है।

2. **लोकतान्त्रिक व्यवस्था** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं का निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में विभाजन, नीतियों का निर्धारण, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का निर्धारण, संसाधनों का आबंटन आदि सभी बातों पर निर्णय जन प्रतिनिधियों द्वारा लिया जाता है। इस प्रकार मिश्रित अर्थव्यवस्था का संचालन लोकतान्त्रिक पद्धति द्वारा

किया जाता है और इसमें एकाधिकारी एवं तानाशाही की प्रवृत्तियाँ नहीं पायी जाती हैं।

3. **आर्थिक नियोजन** – इस में देश के आर्थिक विकास हेतु आर्थिक नियोजन को अपनाया जाता है। इसके अन्तर्गत सरकार निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों के लिए भौतिक एवं वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करती है। दोनों ही क्षेत्र अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कार्य करते हैं।

4. **आर्थिक स्वतन्त्रता** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में आर्थिक स्वतन्त्रता तो होती है, किन्तु पूँजीवाद की तुलना में कम होती है। इस व्यवस्था में सामाजिक हित एवं कल्याण को ध्यान में रखकर व्यक्तिगत उद्यमियों को सीमित आर्थिक स्वतन्त्रता प्रदान की जाती हैं। मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूँजीवाद की तरह उपभोक्ता की संप्रभुता तो नहीं होती परन्तु फिर भी जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों द्वारा आर्थिक नियोजन का स्वरूप निर्धारण होने के कारण व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पूर्णतः समाप्त नहीं होती।

5. **मूल्य-यंत्र पर नियन्त्रण** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में 'मूल्य-यंत्र' के संचालन को सरकार जन कल्याण की दृष्टि से अपनी कीमत नीति द्वारा नियन्त्रित करती है। इस व्यवस्था में एक सीमित सीमा तक मूल्य तंत्र क्रियाशील रहता है।

6. **लाभ उद्देश्य** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की महत्पूर्ण भूमिका रहती है। निजी क्षेत्र द्वारा अपनी आर्थिक क्रियाओं का संचालन लाभ के उद्देश्य से किया जाता है। अर्थव्यवस्था में साधनों का आवंटन इसी लाभ उद्देश्य के आधार पर किए जाते हैं।

7. **आर्थिक समानता एवं सामाजिक न्याय** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी सम्पत्ति, उत्तराधिकार तथा अन्य स्वतन्त्रताएँ पायी जाती है, किन्तु सरकार आर्थिक विषमताओं को कम करने के लिए धनी व्यक्तियों पर कर लगाकर, उससे प्राप्त आय को गरीबों के कल्याण के लिए खर्च करती है।

8. **सामाजिक सुरक्षा** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में सरकार सामाजिक सुरक्षा पर विशेष ध्यान देती है। सरकार वृद्धावस्था पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, दुर्घटना एवं मृत्यु बीमा आदि के द्वारा सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है।

### मिश्रित अर्थव्यवस्था के गुण

मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रमुख गुण निम्नालिखित हैं –

1. **आर्थिक विकास में तेजी** – इस प्रणाली में निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्र एक साथ मिलकर अर्थव्यवस्था में विकास की दर में वृद्धि का प्रयास करते हैं। आर्थिक नियोजन अपनाकर साधनों का अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में अनुकूलतम आवंटन किया जाता है। इस प्रकार संसाधनों का सर्वश्रेष्ठ प्रयोग कर आर्थिक विकास की दर को तेज किया जाता है।

2. **धन के केन्द्रीयकरण एवं एकाधिकार पर रोक** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में सरकार का निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों पर पूर्ण नियन्त्रण होता है। सरकार निजी क्षेत्र की क्रियाओं को सामाजिक हित को ध्यान में रखकर नियंत्रित करती है। इसके साथ ही जनहित के लिए आवश्यक क्षेत्रों का राष्ट्रीयकरण करके एकाधिकार को समाप्त करने का प्रयास किया जाता है।

3. **स्वतन्त्रता एवं प्रेरणा की उपस्थिति** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में व्यक्तिगत लाभ एवं स्वामित्व का अधिकार होने के कारण उत्पादकों एवं व्यक्तियो को कार्य करने की पर्याप्त प्रेरणा मिलती है। इसमें उपभोक्ता को अपनी आय अर्जित करने और उसे व्यय करने की पर्याप्त स्वतन्त्रता होती है।

4. **सामाजिक कल्याण में वृद्धि** – इस प्रणाली में सरकार द्वारा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का नियन्त्रण एवं संचालन सामाजिक कल्याण के उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है। सरकार स्वयं कल्याणकारी नीतियों को क्रियान्वित करती है।

**5. आर्थिक विषमताओं में कमी** – इस प्रणाली में सरकार आर्थिक विषमता को कम करने के लिए धनी व्यक्तियों पर कर लगाकर आय प्राप्त करती है तथा इस प्रकार प्राप्त आय को गरीब व्यक्तियों को सुविधायें उपलब्ध कराने पर व्यय करती है। इससे समाज में धन के वितरण की विषमता नियन्त्रण में रहती है।

**6. औद्योगिक शान्ति एवं सामाजिक सुरक्षा** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में श्रमिकों के हितों को ध्यान में रखकर अनेक कानून बनाए जाते हैं। सरकार द्वारा न्यूनतम मजदूरी, कार्य की दशाएँ तथा कार्य के घण्टे निर्धारित किए जाते हैं। इससे हड़ताल एवं तालाबन्दी जैसी समस्याएँ कम होती हैं। इसके साथ ही वृद्धावस्था-पेंशन, दुर्घटना बीमा, बेरोजगारी भत्ता आदि की भी व्यवस्था होती है। इस प्रकार मिश्रित आर्थिक प्रणाली में सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था सरकार द्वारा की जाती है।

**7. मानव संसाधनों का समुचित उपयोग** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र मिलकर आर्थिक गतिविधियों का संचालन करते हैं। सरकार द्वारा रोजगार के विशेष कार्यक्रम भी क्रियान्वित किए जाते हैं। बेरोजगारी की स्थिति में युवाओं को भत्ता भी दिया जाता है। सरकार का प्रयास यह रहता है कि मानव संसाधनों का समुचित उपयोग हो।

**मिश्रित अर्थव्यवस्था के दोष** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में पाये जाने वाले प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं –

**1. दुर्बल एवं अकुशल प्रणाली** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में पाये जाने वाले सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र पूर्णत: विपरीत पद्धति से कार्य करने वाले क्षेत्र हैं जिसके कारण इनमें उचित सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था का कुशल संचालन नहीं हो पाता और दोनों क्षेत्र परस्पर पूरक न बनकर प्रतिस्पर्धी बन जाते हैं। अत: इसे एक दुर्बल और अकुशल प्रणाली माना जाता है।

**2. राष्ट्रीयकरण का भय** – मिश्रित प्रणाली में निजी क्षेत्र को सदैव राष्ट्रीयकरण का भय बना रहता है। इस भय के कारण उद्यमियों में विनियोग के प्रति विशेष रुचि एवं प्रेरणा उत्पन्न नहीं हो पाती। राष्ट्रीयकरण के भय के कारण विदेशी उद्यमी भी इन देशों में अपनी पूँजी का निवेश नहीं करते। प्रजातांत्रिक देशों में चुनाव के बाद सरकारें बदलती रहती हैं। इससे सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों में परिवर्तन हो जाता है। इससे आर्थिक विकास की गति प्रभावित होती है।

**3. अकुशलता** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूँजीवाद एवं समाजवाद दोनों के दोष विद्यमान रहते हैं। इस प्रणाली में न तो नियोजन तंत्र ठीक ढंग से कार्य कर पाता है और न ही बाजार तंत्र क्रियाशील हो पाता है। इससे अर्थव्यवस्था में अकुशलता फैल जाती है।

**4. निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन नहीं** – इस प्रणाली में सरकार सार्वजनिक क्षेत्र को अधिक महत्व देती है। फलत: निजी क्षेत्र की उपेक्षा होती है। सरकारी नीतियाँ एवं कार्यालय भी निजी क्षेत्र के हित में नहीं होते। फलत: निजी क्षेत्र का समुचित विकास नहीं होता।

**5. विदेशी पूँजी का आगमन** – सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार हेतु सरकार विदेशी पूँजी को आमंत्रित करती है। इससे देश में विदेशी शक्तियों का प्रभाव बढ़ जाता है। विदेशी शक्तियाँ देश की राजनैतिक व्यवस्था को भी प्रभावित करती हैं।

**6. व्यावहारिकता का अभाव** – मिश्रित आर्थिक प्रणाली में निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र दोनों साथ-साथ कार्य करते हैं। इससे एक पक्ष को जो नीतियाँ लाभदायक होती है, वे दूसरे पक्ष के लिए हानिप्रद हो सकती हैं। निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में समन्वय के अभाव में परस्पर प्रतियोगिता हो जाती है। परिणामस्वरुप अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

## शब्दावली

**बाजार शक्तियाँ** – बाजार का संचालन माँग एवं पूर्ति की शक्तियों के द्वारा होता है। इन्हीं शक्तियों से अर्थव्यवस्था में उत्पादन, उपभोग, वितरण आदि से आर्थिक क्रियाओं का निर्धारण होता है।

**निर्बाधावादी अर्थव्यवस्था** – वह अर्थव्यवस्था जो सरकारी हस्तक्षेप एवं नियंत्रण से पूर्णतः मुक्त रहती है, निर्बाधावादी अर्थव्यस्था कहलाती है।

**मूल्य तंत्र** – पूँजीवाद के अन्तर्गत किसी भी वस्तु का मूल्य उनकी माँग एवं पूर्ति की शक्तियों के द्वारा निर्धारित होता है। मूल्य निर्धारण की इस प्रक्रिया को मूल्य तंत्र कहा जाता है।

**तेजी एवं मन्दी** – वस्तुओं की कीमतों में क्रमशः वृद्धि को तेजी एवं कीमतों में कमी को मन्दी कहा जाता है। तेजीकाल में कीमतों में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन, रोजगार एवं आय में वृद्धि होती है। इसके विपरीत मन्दीकाल में उत्पादन घटता है तथा बेरोजगारी बढ़ती है।

**अनियोजित अर्थव्यस्था**– जिस अर्थव्यवस्था में नियोजन नहीं अपनाया जाता, उसे अनियोजित अर्थव्यवस्था कहा जाता है।

**स्वसंचालित प्रणाली** – वह प्रणाली जसमें सरकार का कोई भी हस्तक्षेप नहीं होता। अर्थव्यवस्था का संचालन मूल्य यंत्र के द्वारा होता है।

**उत्तराधिकार** – जब पिता की सम्पत्ति पर उसके बच्चों का कानूनी अधिकार होता है, तब उसे उत्तराधिकार कहा जाता है।

**व्यापार चक्र** – तेजी एवं मन्दी काल की पुनरावृत्ति होने की प्रवृत्ति को व्यापार चक्र कहा जाता है।

**परिजीविता** – ऐसे व्यक्ति जो बिना श्रम किए किसी दूसरे की संपत्ति के द्वारा अपना जीवनयापन करते हैं, परिजीवी कहलाता हैं।

## अभ्यास

### सही विकल्प चुनिए

1. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में साधनों पर स्वामित्व होता है–

   (i) सरकार का (ii) निजी व्यक्तियों का

   (iii) दोनों का (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

2. पूँजीवादी में आर्थिक शक्तियों का संचालक होता है –

   (i) लोकतंत्र (ii) मूल्य यंत्र

   (iii) राजतंत्र (iv) उपर्युक्त सभी

3. समाजवाद में उपभोक्ता की संप्रभुता –

   (i) बढ़ जाती है (ii) स्थिर रहती है

   (iii) अप्रभावित रहती है (iv) समाप्त हो जाती है

4. व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव पाया जाता है –
   (i) पूँजीवाद में (ii) मिश्रित अर्थव्यवस्था में
   (iii) समाजवाद में (iv) उपर्युक्त सभी में
5. भारतीय अर्थव्यवस्था में किस प्रणाली को अपनाया है –
   (i) पूँजीवादी प्रणाली (ii) समाजवादी प्रणाली
   (iii) मिश्रित अर्थव्यवस्था प्रणाली (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं

## रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. पूँजीवाद में उत्पादन के साधनों पर ..................... का अधिकार होता है।
2. .............. को समाजवाद का जनक माना जाता है।
3. 'संयुक्त क्षेत्र' का संचालन सरकार एवं ................ दोनों द्वारा मिलकर किया जाता है।
4. समाजवाद में उत्पत्ति के साधनों पर स्वामित्व ............. होता है।
5. भारत में ............. अर्थव्यवस्था को अपनाया गया है।

## सही जोड़ी बनाइए

| क | | ख |
|---|---|---|
| पूँजीवाद | – | सरकार का |
| समाजवाद | – | व्यक्तियों तथा सरकार का |
| मिश्रित अर्थव्यवस्था | – | व्यक्तियों का |

## अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. पूँजीवाद में आर्थिक प्रणाली का संचालन किस तंत्र द्वारा होता है?
2. समाजवाद में उत्पत्ति के साधनों पर किसका अधिकार होता है?
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था किन दो आर्थिक प्रणालियों का मिश्रण है?
4. भारत में कौन सी प्रणाली अपनाई गई है?
5. मिश्रित अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के साधनों पर किसका अधिकार होता है?

## लघुउत्तरीय प्रश्न

1. पूँजीवाद व समाजवाद किसे कहते हैं, लिखिए।
2. पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली की विशेषताएँ बताइए।
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हैं एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था के दोष बताइए।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आर्थिक प्रणाली का अर्थ बताते हुए। इसकी विशेषतायें लिखिए।
2. पूँजीवाद का अर्थ बताइए तथा इसके लक्षण लिखिए।
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था किसे कहते हैं एवं इस प्रणाली की क्या विशेषताएँ हैं? लिखिए।
4. पूँजीवाद के गुण एवं दोषों की व्याख्या कीजिए।
5. समाजवादी आर्थिक प्रणाली क्या है? इसकी विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।